हैदराबाद की पहचान चारमीनार

सुल्तान मुहम्मद क़ुली क़ुतुब शाह, क़ुतुब शाही वंश के पांचवें शासक ने गोलकुंडा से नवनिर्मित हैदराबाद में अपनी राजधानी को स्थानांतरित करने के बाद 1591 ई. में चारमीनार का निर्माण कराया था। यह ऐतिहासिक धरोहर तेलंगाना प्रांत के हैदराबाद में स्थित एक स्मारक और मस्जिद है। यह विश्व स्तर पर हैदराबाद के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा तैयार आधिकारिक स्मारकों की सूची में एक पुरातात्विक और वास्तुशिल्प खजाने के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। इसे देखने के लिए भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के कोने-कोने से पर्यटक आते हैं।

रोहित टंडन
उद्यमी

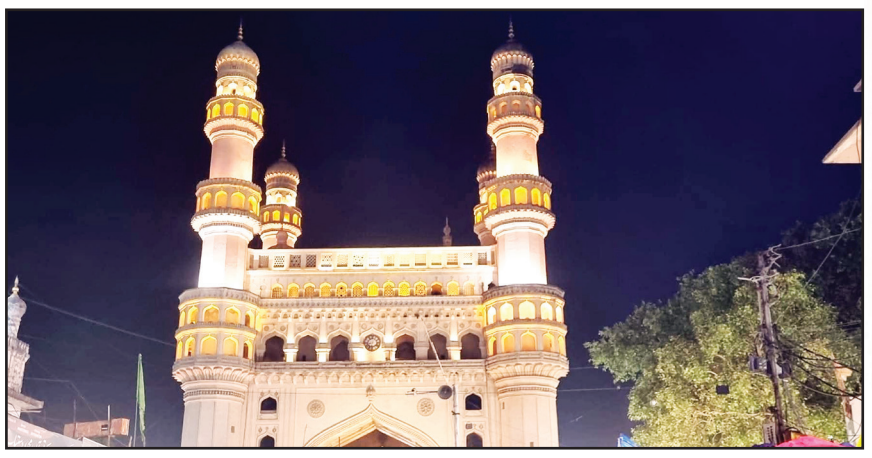

हैदराबादी मोती पूरी दुनिया में प्रसिद्ध

चारमीनार के लंबे इतिहास में 400 से अधिक वर्षों से इसकी शीर्ष पर एक खूबसूरत मस्जिद खुले छत के पश्चिमी छोर पर स्थित है। ऐतिहासिक और धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण, यह संरचना के आसपास के लोकप्रिय और व्यस्त स्थानीय बाजारों के लिए भी जाना जाता है, और हैदराबाद में सबसे अधिक बार आने वाले पर्यटक आकर्षणों में से एक बन गया है। इसके पश्चिम स्थित बाज़ार और दक्षिण पश्चिम में सबसे बड़ी और सुंदर मक्का मस्जिद स्थित है। अपने सुनहरे दिनों में चारमीनार बाजार में लगभग 14,000 दुकानें थीं। इस बाजार में पर्यटक और स्थानीय लोग विशेष रूप से आभूषण, उत्तम चूड़ियां और प्रसिद्ध हैदराबादी मोती के लिए आते हैं।

मूसी नदी के तट पर है स्थित

चारमीनार मूसी नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। चारमीनार एक चौकोर संरचना है। जिसकी हर एक वर्ग 20 मीटर (लगभग 66 फीट) लंबा है। प्रत्येक वर्ग के पास चारों में से एक भव्य मेहराब है तथा प्रत्येक ऐसे मुख्य बिंदुओं के सामने है जो सीधा अपने-सामने वाली सड़क के सामने खुलते हैं। प्रत्येक कोने पर एक उत्कृष्ट मीनार 159.77 फीट ऊंची एक डबल छज्जे के साथ खड़ी है। जिसे आधार पर डिजाइन की तरह एक बल्बनुमा गुंबद द्वारा ताज पहनाया गया है। चारमीनार के ऊपर पहुंचने के लिए 149 घुमावदार सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं।

चूना- पत्थर और ग्रेनाइट से है बना

चारमीनार ग्रेनाइट, चूना पत्थर, मोर्टार और चूर्णित संगमरमर से बना है। शुरूआत में इसके चार मेहराब के साथ स्मारक के लिए ऐसी सटीक योजना बनाई थी कि जब चारमीनार खोला गया था तब प्रत्येक मेहराब से हैदराबाद शहर के चारों कोनों की झलक मिलती थी, क्योंकि प्रत्येक मेहराब किसी एक सबसे सक्रिय शाही सड़कों के सामने था। वहां भी एक भूमिगत सुरंग की भी योजना का जिक्र है। संभवतः घेराबंदी के समय कुतुब शाही शासकों के लिए भागने के एक मार्ग के रूप में इरादा गोलकुंडा से इसे सुरंग से जोड़ने का रहा होगा, हालांकि सुरंग का स्थान अज्ञात है।

आधार पर स्थित है भाग्यलक्ष्मी मंदिर

भाग्यलक्ष्मी मंदिर भी चारमीनार के आधार पर स्थित है। चारमीनार का प्रबंधन करने वाले हैदराबाद उच्च न्यायालय ने मंदिर के आगे विस्तार को रोक दिया है। जबकि वर्तमान में मंदिर की उत्पत्ति विवादित नहीं है। यह मंदिर भी पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन है।

कानपुर को 40 फीसदी भी नहीं दिखा पाता मुंबई

मुंबई फिल्म इंडस्ट्री को कानपुर शहर की लैंग्वेज, यहां का रहन-सहन और परिवेश बहुत सूट कर रहा है। शहर के अलग-अलग विषय को देश दुनिया में पसंद किया जाता है, इसीलिए फिल्म निर्माता तेजी से शहर की ओर रुख कर रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वह अपनी फिल्मों में शहर को 40 फीसदी भी नहीं दिखा पाते हैं। यह कहना है शहर के युवा एक्टर अजय मिश्रा का। अक्षय, अरशद और सौरभ शुक्ला स्टारर फिल्म जॉली एलएलबी 3 के प्रोमोशन वीडियो में दिखे शहर के अजय मिश्रा ने बॉलीवुड फिल्मों के साथ ही एक दर्जन से अधिक टीवी शो व वेब सीरीज में भी कार्य किया है। *प्रस्तुति: अभिषेक वर्मा*

शहर के बर्रा में रहने वाले अजय मिश्रा का किसान परिवार भीतरगांव में रहता है। उन्होंने बताया कि महाभारत, शक्तिमान जैसे शो को देखने के बाद बचपन से ही एक क्रेज था कि एक दिन बड़े पर्दे पर दिखना है। टीवी देखने के चलते मां से कई बार मार खाया, इस दौरान मां से भी डॉयलाग मारता था कि 'मर्द के दर्द नहीं होता है' 2003 से स्ट्रगलर कर रहे अजय मिश्रा ने बताया कि पढ़ाई और दूसरे कार्य के साथ एक्टिंग के लिए दिल्ली-मुंबई के चक्कर लगता रहा।

टीवी पर आने वाले शो जमुनिया, जोधा अकबर के साथ ही क्राइम पेट्रोल व अन्य टीवी शो में जो भी छोटे रोल मिले किए। उन्होंने बताया कि 2018 में पहली बार फैमिली ऑफ ठाकुरगंज में जिम्मी शेरगिल और सौरभ शुक्ला स्टारर फिल्म से पहचान मिली। इस फिल्म में सौरभ शुक्ला का राइट हैंड 'लल्ला' नाम के किरदार को निभाया। अजय कहते है कि 2 घंटे की फिल्म में 15 मिनट स्क्रीन पर रहना मेरे लिए बड़ा सुखद रहा। इसके बाद अजय देवगन की फिल्म भोला ने भी अच्छी टीआरपी दी। राजकुमार राव की फिल्म मालिक, सुबेदार में भी किरदार मिल चुका है।

साल के अंत में रिलीज होगी 'द हिस्ट्रीशीटर'

अजय मिश्रा ने बताया कि एक्टिंग के साथ ही कास्टिंग और लाइन प्रड्यूसर का कार्य भी कर रहे हैं। बताया कि 2017 से एक फिल्म 'द हिस्ट्रीशीटर' पर कार्य कर रहे थे, बजट व अन्य आभाव के चलते यह फिल्म रिलीज नहीं हो सकी थी, लेकिन अब यह बनकर तैयार है। अजय ने बताया कि सस्पेंस थ्रिलर फिल्म में कानपुर और आस-पास की कहानी देखने को मिलेगी। इसी साल के अंत में फिल्म को रिलीज करने की तैयारी है।

551
रुपये का है जॉली पान

हाल में ही जॉली एलएलबी 3 का प्रोमोशन वीडियो लांच हुआ है। इसमें शहर के अजय मिश्रा जॉली पान बेचते दिखाई दे रहे हैं। अजय मिश्रा डॉयलॉग बोल रहे हैं कि जॉलीपान है देख नहीं रहे हैं, इसमें बनारस का पत्ता है, इलायची दुबई की है और चूना है जापान का। इस प्रोमोशन वीडियो को भी खूब देखा जा रहा है।

मुंबई में कंपटीशन के साथ विश्वासघात बड़ी चुनौती

अजय मिश्रा ने कहा कि फिल्म इंडस्ट्री इतनी जल्द किसी को अपनाती नहीं है। बहुत कंपटीशन है। चप्पलें घिसकर यहां तक पहुंच पाया हूं। उन्होंने कहा कि यहां चुनौती तो है, इसके साथ ही विश्वासपात्र लोग मिल पाना बड़ा मुश्किल टास्क है। जिसको आगे बढ़ाने की सोचा वह आपको अगले कदम पर गिराने के लिए खड़ा है। लेकिन, इन बुराइयों को भूल जाओ तो बहुत से बेहतर लोग भी यहां हैं जो गिरते समय आपका हाथ भी पकड़ते हैं। ऐसे ही कुछ लोगों की मदद और अपनी मेहनत से यहां तक पहुंच पाया हूं।

यूं ही नहीं कहते हैं, राधा के बिना श्याम आधा

राधे-राधे और जयश्री राधे का बढ़ते महिमा गान के बीच राधा रानी के अनन्य भक्त वृंदावन के प्रसिद्ध संत प्रेमानंद महाराज द्वारा राधा नाम जप की महत्ता स्थापित करने के बाद तमाम लोगों के मन में राधा की शक्ति और भक्ति को लेकर अनेक प्रकार के प्रश्न हैं। आइए जानते हैं कि कौन हैं राधा और कैसे हुआ प्रादुर्भाव।

नमिता त्रिपाठी
लेखिका

राधा का जन्म शक्ति और भक्ति का अवतार

राधा का जन्म शक्ति और भक्ति के अवतार के रूप में हुआ। वे परम प्रेम, समर्पण और भक्ति की मूर्ति हैं। श्रीकृष्ण और राधा का संबंध जीव और परमात्मा के मिलन का प्रतीक है, इसीलिए राधा को कृष्ण से भी बढ़कर पूज्य माना जाता है, क्योंकि राधा के बिना कृष्ण की लीला अधूरी है। राधा रानी के जन्म को लेकर शास्त्रों और पुराणों का सार यही है कि राधा स्वयं श्रीकृष्ण की अनन्त शक्ति-ह्लादिनी शक्ति का अवतार हैं। उनका जन्म माता के गर्भ से नहीं बल्कि योगमाया से हुआ था। एक प्रसिद्ध मान्यता के अनुसार, रावली ग्राम (बरसाना के समीप) में वृषभानु और उनकी पत्नी कीर्ति देवी रहते थे। कीर्ति देवी धर्मपरायण होकर भी संतान-सुख से वंचित थी। एक दिन उन्होंने यमुना तट पर तपस्या की, तभी आकाशवाणी हुई, हे देवी, तुम्हें स्वयं लक्ष्मी स्वरूपा कन्या प्राप्त होगी, जो श्रीकृष्ण की अनन्त प्रेयसी और शक्ति का अवतार होगी। कुछ समय बाद कीर्ति देवी ने एक कन्या को कमल के फूल पर प्रकट होते हुए देखा। उसे वह अपने घर ले आईं। यही राधा थीं। एक अन्य किवंदती के अनुसार बाबा वृषभानु यमुना में स्नान कर रहे थे। एक कमल का फूल पानी में तैरता हुआ उनके पास आया। जिस पर राधा थीं। उन्हें वह भगवान का प्रसाद मानकर अपनी पुत्री बनाकर घर ले आए।

श्रीकृष्ण और राधा का संबंध आत्मा और परमात्मा का

कहते है, कि भगवान का असली स्वरूप भक्ति के द्वारा प्रकट होता है और राधा उस भक्ति की सर्वोच्च मूर्ति हैं। जब हम राधा का नाम लेते हैं तो हम अपने भीतर प्रेम और समर्पण को जगाते हैं और जब उस भाव के साथ कृष्ण का नाम लिया जाता है तो वह सच्ची पुकार बन जाती है। इसलिए भगवान श्रीकृष्ण के नाम के आगे राधा का नाम लेना चाहिए। श्रीकृष्ण और राधा का संबंध एक नारी और पुरुष का नहीं बल्कि आत्मा और परमात्मा का है। श्रीकृष्ण भगवान हैं, तो राधा उनकी सर्वोच्च भक्त है। इसलिए जब राधारानी का नाम पहले लिया जाता है तो इसका अर्थ होता है कि, परमात्मा तक पहुंचने के लिए हमें पहले भक्ति और प्रेम का सहारा लेना पड़ता है। बिना भक्ति के भगवान तक पहुंचना असंभव है। भक्तों की आराधना से श्रीकृष्ण तब ही खुश होते है जब भक्त प्रीति और समर्पण से उनका अनुसरण करते है। राधा रानी ने अपने जीवन में कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण और निष्काम प्रेम दिखाया। उनके प्रेम में कोई स्वार्थ नहीं था। राधा ने कभी कृष्ण से कुछ मांगा नहीं बल्कि हर पल केवल उनका स्मरण और आराधना की। यही वजह है कि श्रीकृष्ण का नाम राधा नाम के बिना अधूरा है।

पुराणों ही नहीं, वेदों में भी है राधा रानी का गुणगान

ऋषि वेद व्यास ने भागवत की रचना की, लेकिन उसमें राधा का उल्लेख नहीं है, तो वेद व्यास की लेखनी से भागवत ही नहीं, कई अन्य पुराण भी निकले हैं, जिनमें उन्होंने राधा रानी का गुणगान किया है। पद्म पुराण में कहा गया है, हजारों लक्ष्मी राधा के ही विस्तार हैं, जो उनसे प्रकट हुई हैं। नारद पुराण में राधा रानी के बायीं ओर से महालक्ष्मी के प्रकट होने की बात है। आदि पुराण में वेद व्यास कहते हैं कि राधा शाश्वत हैं। मत्स्य पुराण में कहा गया है कि रुक्मिणी तो द्वारिका में रहती हैं, लेकिन राधा सदैव वृन्दावन में रहती हैं। देवी भागवत पुराण में सीख दी गई है कि श्रीकृष्ण से पहले राधा नाम का उच्चारण करें। ब्रह्म वैवर्तक पुराण के अनुसार श्रीकृष्ण राधा के पुरुष रूप हैं, और अंत में, वेदों में भी राधा जी का उल्लेख है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि मैं वृषभानु (राधा के पिता) की पुत्री को प्रणाम करता हूं। राधिकोपनिषद में कहा गया है कि राधा वह सत्ता हैं, जिनके चरण कमलों की धूल को जगत के स्वामी अपने मस्तक पर धारण करते हैं।